International Journal of Applied Research 2020; 6(10): 732-734

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2020; 6(10): 732-734
www.allresearchjournal.com
Received: 15-08-2020
Accepted: 19-09-2020

डॉ0 मनोज कुमार राम
इतिहास विभाग ल0 ना0 मि0 वि0, कामेष्वरनगर, दरभंगा, बिहार, भारत।

Corresponding Author:
डॉ0 मनोज कुमार राम
इतिहास विभाग ल0 ना0 मि0 वि0, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार, भारत।

भारतीय मजदूर आन्दोलन और विभिन्न श्रमिक संगठन की भूमिका

डॉ0 मनोज कुमार राम

सारांश
20वी सदी के दूसरे दशक में संगठित मजदूर आन्दोलन का विकास हुआ भारत के औधोगिक मजदूरों ने अपनी बेहतर शर्तो, सुरक्षा तथा वेतन के पूरे औपनिवेशिक काल में अनवरत संघर्ष किया जो आधुनिक भारतीय इतिहास का महत्वपपूर्ण अध्याय माना जाता है। मजदूर आंदोलन पर मार्क्सवाद का सबसे अधिक प्रभाव था, जिसकी प्रेरण से उनमें वर्ग चेतना का प्रस्फुटन हुआ। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद यह मजदूरोंकी वर्ग चेतना थी। जो उन्हें एक साथ पूँजीवाद और उपनिवेशवाद के दोनो मोर्चो पर संधर्ष के लिए अनुप्रेरित किया।

मूल शब्दः मजदूर, आन्दोलन, श्रमिक संगठन, भूमिका

प्रस्तावनाः
इस विभिन्न संघर्षो के जरिए मजदूर आंदोलन ने संगठिज रूप धारण करना आरंभ किया। आरंभ में कुछ समाजसेवी मजदूरों के उपकार के लिए आगे बढ़े। इस समाजसेवी मजदूरों के उपकार के लिए आगे बढ़े। इस समाज सेवियों में सबसे पहले नाम आता है बंगाल के ब्रह्यसमाजी नेता शशिपद बनर्जी का। चौबीस परगना जिले में कलकत्ता के उत्तर किनारे पर स्थित बरानगर उनके कार्यो का केन्द्र था 1 नवंबर 1866 को उनके प्रयास से मजदूरों की एक सभा हुई। अपने भाषण में उन्होने कहा अपनी हालत के लिए खुद आपकी सम्मिलित और अनुशासनबद्ध चेष्टा की आवश्यकता है। इसी सभी ने बरानगर में रात्रि पाठशाला खोलने का फैसला किया। बाद में ऐसी पाठशालाए कामारपाड़ा, आडियादह कुटिघाट आदि आसपास के स्थानों में खुली। मजदूरों की भलाई के लिए उन्होने सुरापान निवारणी समिती और आना बैक की स्थापना की। [2]इनके जरिए शराबबंदी और मितत्ययिता का प्रचार किया जाता। 1870 में उन्होनें मजदूरों को संगठित करने के लिए श्रमजीवी समिति (वर्किगमेंस क्लब) को स्थापना की। इस संस्था के सम्मेलनों में भाषण देने के लिए वह द्वारानाथ गांगुली, कृष्ण कुमार मिश्र कालीशंकर सुकुन जैसे जैसे प्रसिद्ध वक्ताओं को ले आता ब्रिटेन की प्रसिद्ध समाजसेविका मिस मेरी कारपेंटर के निमंत्रण पर वह 1871 में विलायत से वापस आकर उन्होने भारत श्रमजीवी नामक सचित्र मासिक पत्र निकाला जिसकी कीमत सिर्फ एक पैसा थी। इसकी विक्रय कीमत सिर्फ थी। इसकी विक्रय संख्या 15 हजार तक पहुँच गई थी 1873 में लिखा जाता। ये मजदूरों और मालिको के बीच मध्यस्थ का काम भी करतेथे। इस तरह वे मजदूरों की तकलीफों को दूर करने को कोशिश करते थे। मालिक उनपर बड़ा विश्वास करते थे।

संठन की और
संघर्षो के जरिए मजदूर आदोलन ने संगठित रूप धारण करना आरंभ किया। आरंभ में कुछ समाजसेवी मजदूरों के उपकार के लिए आगे बढ़े। इस तरह प्रथम विश्वयुद्ध के पहले के मजदूर आंदोलन पर विचार करने से हमें पता चलता है कि यधपि नवजात मजदूर वर्ग ने शोषण उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाना और उड़ना बहुत पहले से आरंभ किया पा, उसने 1907 की रेलवे हड़ताल और 1908 की बंबई हड़ताल जैसी बड़ी लड़ाईया भी लड़ी थी, तथापि अब भी मूलतः वह असगठित था। उसकी लड़ाइयों के पिछे उसका अपना कोई मजबूज संगठन न था। इस लड़ाइयों के दौरान खासकर, बीसवी सदी में उसके संगठन बनने लगे थे, लेकिन वे अपनी शैश्सवावस्था में थें।
इसके बाद प्रथम विश्वयुद्ध आया और रूस में समाजवादी क्रांति हुई। इन दोनो ने मिलकर भारत के मजदूर वर्ग और उसका आंदोलन में आमूल परिर्वतन हुआ, प्रथम महायुद्ध के बाद भारत में आधुनिक मजदूर अरांदोलन के लिए जमीन तैयार हो चुकी और मजदूर वर्ग न बड़ी दृढ़ता और आत्म विश्वास के साथ इस दिशा में कदम उठाए। रूस के श्रमजीवियों की क्राति 1917 में युरोप के पूर्वी मोर्चे का युद्ध समाप्त कर दिया था।[3]

बढती चेतन, संगठन शक्ति

क्या इस क्रांति का कोई तत्कालिक असर भारत के श्रमजीवियों पर पड़ा? इसके प्रमाण हमें नही मिलते, लेकिन फरवरी क्राति के चंद महीने के बाद ही भारत के मजदूरों को युद्धकालीन सरकारी कठोरता की परावाह न कर, हड़तालों की पहली लहर बंबई के कपड़ा मिल मजदूरों में दिखाई पड़ी और अक्टूबर 1917 तथा 30 से ज्यादा हड़ताले हुई। मजदूरों की आम मांग थी कि महगाई से होने वाले नुकसान को पूरा करने के लिए वेतन बढ़ाया जाए, और मांग को वे एक हद तक पूरा कराकर रहे। ये हड़ताले अलग–अलग हुई थी। ज्योही एक कपड़ा मिल के मजदूर अपनी मांग कुछ हद तक हासिल कर हड़ताल बंद करते दूसरे मिल के मजदूर वेतन वृद्धि के लिए हड़ताल शुरू कर देते।[4]

1918 में और भी ज्यादा हड़ताल हुई। उसके पहले ही छह महीनों में सिर्फ बंबई में 52 हड़तालों का हिसाब मिलता है। बंबई के अलावा अहमदाबाद, मद्रास आर कलकत्ता में बड़ी–बड़ी हड़तालें हुई। अहमदाबाद, में 1917 में अंत में प्लेग के कारण बहुत से लोग मर गए थे, और अनेक लोग शहर छोड़ कर भाग गये थे। मजदूरो के अभाव देखकर कारखानेदारों ने मजदूरों को 'हाजिरों बोनस' देना शुरू किया पर जो वेतन का लगभग 70 प्रतिशत होता था। 1918 के आरंभ में कारखानेंदारो ने उसे घटाकर 20 प्रतिशत कर देना चाहा। इससे वहाँ के मजदूरो ने 22 फरवरी 1918 को हड़ताले कर दी और वह प्राय एक महीने तक चली। अंत में 35 प्रतिशत पर समझौते हुआ। यह मजदूरों की आंशिक विजय थह। इस हड़ताल में गांधीजी को हस्तेल करते और समझौता कराने की कोशिश करते देखा गया। मद्रास में बिन्नी कंपनी की बैकिधम एंड कर्नाटक मिल में मजदूरो ने 25 प्रतिशत बेतन बढ़ाने की मॉग की। मालिको के कान पर जब जूं ने रेगी, तो मजदूरों ने बड़ी संख्या में हस्तांक्षर कर एक आवेदन पत्र अपनी युनियन के अध्यक्ष बी0 पी0 वाडिया को दिया। यह यूनियन अप्रैल 1918 में बनी थी वाडिया ने हड़ताल का विरोध किया। इसका विरोध करते उन्होने जो तर्क दिया वह मजेदार है। 13 जुलाई 1918 को मजदूरो की सभा में भाषण देते हुए उन्होने कहा।[5]

अगर हड़ताल करके आप मैसर्स बिन्नी एंड को की जेब पर असर डालने जा रहे है, तो मैं बुरा न मानूंगा क्योकि वे बहुत पैसा बना रहे है। लेकिन ऐसा कर आप मित्र राष्ट्रों को नुकसान पहुँचाएगें। हमारे सिपाही जिनके पहनने के लिए कपड़ा चाहिए। असुविधा में पड़ जाएगे, और सिर्फ इसलिए कि मिल से संबंधित कुछ युरोपियन तथा यह सरकार बुरी तरह काम कर रही है, हमें उन लोगो को मुसीबत में डालने का कोई अधिकार नहीं जो हमारे महाराज के लिए लड़ रहे है। इसलिए हमें हड़ताल नही करनी चाहिए। उनका यह भाषण दिखाता है कि वाडिया किस किस्म के नेतर थे। इस थियोसोफिस्ट नेताओं का एकमात्र उद्देश्य मजदूर वर्ग के ब्रिटिश साम्राज्यवादियों का वफादार गुलाम बनाना था[6]

भारतीय वाडिया की सम्राटभक्ति से मजदूरों की हड़ताल तो रूक गई लेकिन कारखानों के ब्रिटिश मालिकों की सम्राटभक्ति उपनी तिजोरियों के स्वार्थ से दुर्बल साबित हुई। उन्होने यह कहकर कि मजदूर छह बजे सबेरे मिल के फाटक पर हाजिर होने के नियम का पालन नही करते, जल्दी ही कारखाने में तालाबंदी कर दी। एक महीने बाद नवबर में उन्होने दूबारा तालाबंदीकी घोषना की यह कहकर कि प्रबंध विभाग के दो साहबों की पिटाई अज्ञात आदमियों ने कर दी है और कंपनी का विश्वास है कि ये आदमी कारखाने के ही मजदूर है। यहाँ के मजदूरों को उस वक्त अपने नेतृत्व की दुर्बलता की वजह से हड़ताल बंद रखनी पड़ी और अपनी मांगे छोड़ देनी पड़ी। 1918 में ही बंगाल कि चटकल मजदूरों ने भी हड़ताल की।

उनकी हड़ताल वेतन में कटौती के खिलाफ थी। चटकल मालिको के संगठन इंडियन जूट मिल एसोसिएशन ने इसके पहले 'खोराकी' के तौर पर वेतन में 10 प्रतिशत वृद्धि की थी, लेकिन इसी को बाद में काट लेना चाहा था। इस तरह देखते है कि मजदूर वर्ग ने प्रथम विश्वयुद्ध के खत्म होने तक संगठित रूप से हड़ताल के हथियार का इस्तेमाल करना सीख लिया था। आगामी वर्षो मे उसने इस हथियार पर सान रखी, उस ताकतवर और कारगर बनाया।[7]

1919 का आरंभ के कपड़ा मिल मजदूरों की आम हड़ताल के साथ हुआ। वहाँ की लगभग 85 कपड़ा मिलों में से 80 मिलों के मजदूरों ने हड़ताल की। एक साथ इतने मजदूरों की हड़ताल भारत के इतिहास में बिलकुल नई बात थी। यह हड़ताल दो सप्ताह से ज्यादा चली और मजदूरी में लगभग 10 प्रतिशत की वृद्धि कराकर समाप्त हुई। इसके बाद तो हड़ताल सूखें जंगल की आग की तरह तेजी से बढ़ती गई और रेलवे वर्कशाप, डाकयार्ड इंजीनियरिंग, खनिज तेल टकसाल, छापाखाना, बिजली, नगरपालिका यहाँ तक कि घरों में काम करने वाले मजदूरों में भी फैल गई। इन सब हड़तालों का मुख्य उद्देश्य महंगाई के कारण बेतन बढ़वाना था। इस तरह हड़ताल की यह लहर बंबई में ही नही, सारे देश में आई। मद्रास में 1919 में हड़ताले हुई। बंगाल, बिहार और असम में आठ बार हड़ताले हुई।

अखिल भारतीय केन्द्रीय संगठन

1920 तक भारत के मजदूर आंदोलन का जिस तरह विकास हुआ था, एसके लिए अब एक केन्द्रीय संगठन का निर्माण आवश्यक था, ऐसे संगठन काजों सारे मजदूर आंदोलन का एक सूत्र में बांधकर संचालित करे। आल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस (ए0 आई0 टी0 यू0 सी0) के रूप में एक अखिल भारतीय केन्द्रीय संगठन का निर्माण 31 अक्टूबर 1920 को किया गया, लेकिन उपर्युक्त उद्देश्य के लिए नही। उसका निर्माण किया गया था। इंटरनेशनल लेबर आर्गनाइजेशन (आई0 एल0 ओ0) में प्रतिनिधित्व के लिए।[9]

रूस में अक्टूबर क्राँति 1917 के बाद एक साल के अंदर सारी दुनिया के मजदूर वर्ग ने जिस तरह समाजवादी क्रांति और राष्ट्रीय मुक्त क्रांति की तरफ बढ़ना शुरू किया उसे देखकर कर साम्राज्यवादी थर्रा गई। सारी दुनिया में फैली गई क्रांति की लहर के प्रबल थपेड़ों से सभी सामाज्यवादी के सिंहासन डगमगाने लगे। जर्मनी, आस्ट्रिया और हंगरी की क्राँतियों को उन्होने खून की नदी में डुबाया फिर भी उनका डर न गया।[10]

निष्कर्ष

20वीं सदी के दूसरे दशक में संगठित मजदूर आन्दोलन का विकास हुआ भारत के औद्योगिक मजदूरों ने अपनी बेहतर शर्तो, सुरक्षा तथा वेतन के लिए पूरे औपनिवेशिक काल में अनवरत संघर्ष किया। मजदूर आंदोलन ने संगठित रूप धारण करना आरंभ किया। आरंभ में कुछ समाजसेवी मजदूरों के उपकार के लिए आगे बढ़े। इन समाज सेवियों में सबसे पहले नाम आता है। बंगाल के ब्रह्मसमाज नेता शशिपद बनर्जी का। 1920 तक भारत के मजदूरो आंदोलन का जिस तरह विकास हुआ था, उसके लिए अब एक केन्द्रीय संगठन का निर्माण आवश्यक था। ऐसे संगठन काजों सारे मजदूर आंदोलन का एक सूत्र में बांधकर संचालित करे।

संदर्भ

1. गोपाल घोषः– भारतेर श्रमिक आंदोलनेर इतिहास, नवयुगेर साधना, 1913,पृ0–44
2. वही पृ 45
3. ए0 आर0 बनैट हर्स्टः लेबर एडं हाउसिग इन बांबे सिटी लंदन, 1925 पृ0–146
4. गुलजारी लाल नंदाः लेबर अनरेस्ट इन इंडिया, इंडियन इकानमिक जर्नल खंड–3 1922 पृ0–46।

5. आर0 के0 दासः दि लेबर मूवमेंट इन इंडिया, 1923 पृ0–36 से 37
6. गुलजारीलाल नंदा, वही पृ0–46।
7. एस0 डी0 पुन्नेकरः ट्रेड युनियनिज्म इन इंडिया बंबई, 1949 पृ0–78
8. अयोध्या सिंहः भारत का मुक्ति संग्राम, दिल्ली, 2005 पृ0–30 से 35।
9. इंद्र चिद्यावाचस्पतिः भारतीय स्वाधीनता संग्राम का इतिहास, पृ0–339
10. अबुल कलाम आजादः इंडिया विंस फ्रिडम ओरियंट लांगमैस, कलकत्ता, 1959 पृ0–32